37. The moderate leader of the congress who served as a member of Indian Public Service Commission during 1912-1915 was -

(1) Gopal Krishna Gokhale
(2) Dada Bhai Noroji
(3) Surendra Nath Banerjee
(4) Firojshah Mehta

37. कांग्रेस के उदारवादी नेता जिन्होंने 1912 से 1915 के मध्य भारतीय लोक सेवा आयोग के सदस्य के रूप में सेवा दी, वे थे –

(1) गोपाल कृष्ण गोखले
(2) दादा भाई नौरोजी
(3) सुरेन्द्र नाथ बनर्जी
(4) फिरोजशाह मेहता

प्रश्न 37 की भाषा के अनुसार 1912 से 1915 के मध्य किसने भारतीय लोक सेवा आयोग के सदस्य के रूप में सेवा दी जबकि यह सर्व विदित तथ्य है की भारतीय लोक सेवा आयोग की स्थापन्ना 1926 में हुई थी । अत: गोपाल कृष्ण गोखले ने भारतीय लोक सेवा के सदस्य के रूप में सेवा नही देकर 1912 से 1915 में मध्य इस्लिंगटन की अध्यक्षता में शाही कमीशन (रॉयल कमीशन)के सदस्य के रूप में सेवा दी

अत: यह प्रश्न delete करने योग्य है।

Scanned by CamScanner

कक्षा 11

ISBN: 978-93-87089-49-5

राजनीति विज्ञान

Scanned by CamScanner

अध्याय – 14

राष्ट्रीय आंदोलन के उदारवादी (गोपाल कृष्ण गोखले), अतिवादी (बालगंगाधर तिलक) एवं क्रान्तिकारी (सरदार भगतसिंह, चन्द्रशेखर आजाद, सुभाषचन्द्र बोस) दर्शन की धाराएं, नीतियां, कार्यक्रम व लक्ष्य

राष्ट्रीय आंदोलन के उदारवादी : गोपाल कृष्ण गोखले

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन का प्रारम्भिक चरण उदारवाद के आधिपत्य के रूप में जाना जाता है। यह अंग्रेजी साम्राज्य की प्रतिभाओं का "पौष्य शिशु" भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का वह दौर था जबकि इसका नेतृत्व पाश्चात्यमुखी प्रबुद्ध लोग कर रहे थे। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना पाश्चात्य शिक्षा प्राप्त प्रबुद्ध लोगों ने की जो भारतीय समाज के पूँजीपति वर्ग एवं उच्च मध्यम वर्ग के प्रतिनिधि थे। इसी कारण कांग्रेस की आरम्भिक नीति शांतिपूर्ण, संवैधानिक तरीके से सुधार प्राप्त करना तथा ब्रिटिश साम्राज्य के अधीन भारत को बनाये रखना था।

उदारपंथियों के आधिपत्य के काल में शुरू के राष्ट्रीय नेताओं की तीन दिशाओं में आस्था उल्लेखनीय है– धीरे–धीरे सुधारों के लिये आंदोलन, संवैधानिक साधनों का प्रयोग तथा अंग्रेजों की न्याय व निष्पक्ष भावना में विश्वास। उदारवादी नेताओं का मानना था कि ब्रिटिश सरकार के सहयोग एवं सहायता से भारत का क्रमिक विकास संभव है। उदार राष्ट्रवादी काल में राष्ट्रीय आंदोलन का नेतृत्व जिन नेताओं के हाथ में था, उनकी नियमबद्ध प्रगति में आस्था थी। अंग्रेजी शासन सभ्यता एवं संस्कृति में विश्वास रखने वाला यह वर्ग अंग्रेजों की न्यायप्रियता में विश्वास करता था।

राष्ट्रीय आंदोलन के उदारवादी नेताओं को सामान्यतः 'आरामकुर्सी के राजनीतिज्ञ' समझा जाता है। वस्तुतः ऐसी बात नहीं थी और गोखले के संबंध में तो ऐसी किसी बात की कल्पना ही नहीं की जा सकती। देश के प्रति अटूट निष्ठा, तप–त्याग, लगन और अथक परिश्रम में वे राष्ट्रीय आंदोलन के अन्य किसी भी नेता से पीछे नहीं थे। तिलक के शब्दों में, "बहुत ही छोटी आयु में उन्होंने अपने आपको देश सेवा के लिए पूर्णतया समर्पित कर दिया और विविध रूपों में देश की अपरिमित सेवा की।"

जीवन परिचय– गोपाल कृष्ण गोखले का जन्म 1866 ई. में बम्बई प्रान्त के कोल्हापुर जिले में हुआ था। जब उनकी आयु मात्र 13 वर्ष की थी, तभी उनके पिता का देहान्त हो गया और उन्हें शिक्षा प्राप्ति के लिए कठोर संघर्ष करना पडा। लेकिन उनमें दिल और दिमाग की अद्भुत योग्यताएं थी और उन्होंने जीवन में बढ़ी तेजी से उन्नति की। आप 18 वर्ष की आयु में स्नातक हुए और 20 वर्ष की आयु में पूना के अंग्रेजी स्कूल में अध्यापक हुए, जो आगे चलकर विख्यात फर्ग्युसन कॉलेज के रूप में विकसित हुआ। गोखले इस कॉलेज से 1902 ई. में प्रिन्सिपल के पद से रिटायर हुए।

1905 में गोखले उस प्रतिनिधि मण्डल के सदस्य होकर इंग्लैण्ड गए जो ब्रिटिश राजनीतिज्ञों को समझाने बुझाने के लिए गया था। लेकिन उनके विवेकपूर्ण आग्रह का ब्रिटिश नेताओं पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। गोखले ने 1909 के सुधारों को पहले तो स्वागत किया, लेकिन बाद में सुधारों के व्यवहारिक रूप पर घोर निराशा प्रकट करते हुए उन्होंने नौकरशाही के कार्यों की कटु आलोचना की। 1 सितम्बर, 1912 में भारतीय लोक सेवाओं की विभिन्न समस्याओं तथा कार्यप्रणाली के सम्बन्ध में जांच करने के लिए इस्लिंगटन की अध्यक्षता में एक 'शाही आयोग' नियुक्त किया गया था। श्री गोखले इस आयोग के एक सदस्य थे।

अपनी इंग्लैण्ड की यात्राओं में गोखले ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की ब्रिटिश समिति तथा उसके पत्र 'इण्डिया' को सक्रिय बनाने में भी प्रशंसनीय कार्य किया। सर विलियम बैडरबर्न के सहयोग से उन्होंने इस पत्र को भारतीय आंकाक्षाओं की एक ओजस्वी एवं यथार्थवादी प्रवक्ता बना दिया।

सन् 1910 और 1912 में गोखले ने 'इम्पीरियल लेजिस्लेटिव कौंसिल' में नेराल के करारबद्ध भारतीय श्रमिकों की सहायता के लिए प्रस्ताव रखे। इन श्रमिकों की स्थिति आज के 'बन्धुआ श्रमिकों' से भी बदतर थी। 1912 में वे गाँधीजी के निमन्त्रण पर दक्षिण अफ्रीका गए और वहां उन्हें गाँधीजी के नेतृत्व में भारतीय सत्याग्रहियों तथा दक्षिण अफ्रीका की सरकार के बीच समझौता कराने की सफलता मिली। उन्होंने गाँधीजी को सूचित किया कि पंजीकरण के 'काले अधिनियम को रद्द कर दिया जाएगा और तीन पौण्ड के घृणित कर को समाप्त कर दिया जाएगा।

गोखले को गाँधीजी अपना राजनीतिक गुरु मानते थे और गोखले के मन में गाँधीजी के लिए गहरा स्नेह तथा सम्मान था। गाँधीजी उन्हें 'पुण्यात्मा गोखले' कहा करते थे। उनकी निर्दोष देशभक्ति और आकर्षक व्यक्तित्व का ब्रिटेन के नेताओं पर भारी प्रभाव पड़ा था। अपनी चारित्रिक श्रेष्ठता, गंभीर सत्यनिष्ठा और मातृभूमि की अनवरत सेवा से वे भारत तथा विदेशों में अनेक लोगों

Scanned by CamScanner